

चादर ओढ़ाना- किसी विधवा स्त्री को अपना कर अपनी अर्धांगिनी बना लेना, उसका घर बसाना; चादर के बाहर पैर फैलाना- अपनी आय से ज्यादा खर्च करना 3. किसी धातु का बड़ा चौकोर पत्तर, चदर 4. पानी की चौड़ी धार जो ऊपर से गिरती हो 5. बड़ी हुई नदी या वेग से बहते हुए प्रवाह में स्थान-स्थान पर पानी का फैलाव जो बिल्कुल बराबर होता है अर्थात् जिसमें भंवर या हिलोरा न हो 6. चादर की आकृति की पुष्प राशि जो किसी देवता पर चढ़ाई जाती है उदा. मजार पर चादर चढ़ाना 7. खेमा, तंबू 8. पिछौरी।

चादरा पुं. (देश.) बड़ी चादर, मरदानी चादर।

चादिर पुं. (तत्.) 1. कपूर 2. चंद्रमा 3. गज, हाथी 4. सर्प (साँप)।

चानस पुं. (अं./देश.) चांस, मौका, अवसर।

चाप पुं. (तत्.) 1. धनुष कमान 2. गणित में वृत्त का क्षेत्र 3. ज्योतिष में धनु राशि।

चापट स्त्री. (देश.) दाने की वह भूसी जो आटा पीसने पर निकलती है- चोकर।

चापड़ पुं. (तद्.) चिपटा अथवा जो दबकर चिपटा हो गया है 2. बराबर समतल 3. मटियामेट, चौपट, उजाड़ स्त्री. (देश.) चोकर, भूसी।

चापण पुं. (देश.) गुजरात का एक प्रसिद्ध प्राचीन राजपूत वंश जिसने कई सदियों तक गुजरात में राज किया।

चापनता स्त्री. (तत्.) चंचलता।

चापना स.क्रि. (तद्.) 1. दबाना, मीडना, जोतना उदा. चरण चापना (पैर दबाना) 2. अधिकार में करना।

चापर (तद्.) दे. चापड़।

चापल पुं. (तत्.) 1. चंचलता, चांचल्य 2. अस्थिरता 3. क्षोभ, शोखी वि. चंचल, चपल, अस्थाई प्रकृति वाला।

चापनूस वि. (फा.) चाटुकार, खुशामदी, जीहजूरी-स्वभाव वाला।

चापल्य पुं. (तत्.) दे. चापल।

चापी पुं. (तत्.) 1. धनुष धारण करने वाला व्यक्ति धनुर्धर 2. शिव 3. धनुराशि वाला व्यक्ति।

चाफंद पुं. (देश.) मछली पकड़ने का एक प्रकार का जाल।

चाब स्त्री. (तत्.) 1. गजपिप्पली की जाति का एक पौधा जिसकी लकड़ी, फल और जड़ औषधि के काम में आती हैं 2. चार की संख्या 3. कपड़ा 4. चौखूँटी डाढ़ 5. बच्चे के जन्मोत्सव तथा विवाहोत्सवों में परस्पर निभाई जाने वाली लोकरीति।

चाबना स.क्रि. (तद्.) 'चबाना', दाँतो से कुचल-कुचल कर खाने की क्रिया चबाना 2. खूब भोजन करना।

चाबी स्त्री. (देश.) कुंजी-ताली मुहा. चाबी भरना- ऐसी युक्ति करना जिससे किसी व्यक्ति से मनचाहा कार्य कराया जा सके।

चाबुक पुं. (फा.) 1. कोड़ा, हंटर 2. कुछ खास कार्य के लिए उत्तेजना पैदा करने वाली बात उदा. आपकी बात तो रामशंकर पर चाबुक का-सा असर कर गई 3. तेज, फुर्तीला, तीव्र पुं. (तुर्की) प्याला।

चाबुक-सवार पुं. (फा.) 1. घोड़े को विविध प्रकार की चालें सिखाने वाला व्यक्ति 2. वह व्यक्ति जो घोड़े की चाल दुरुस्त करे।

चाभ स्त्री. (देश.) दे. चाबी।

चाभना स.क्रि. (तद्.) जल्दी-जल्दी खाना, भक्षण करना।

चाभा पुं. (देश.) बैलों का एक रोग।

चाम पुं. (तद्.) 'चर्म' चमड़ा, खाल, चमड़ी।

चामर पुं. (तत्.) 1. चँवर, चौरी 2. मोरछल 3. एक वार्षिक छंद।

चामरिक पुं. (तत्.) चँवर डुलाने वाला व्यक्ति, चँवरिया।

चामरी स्त्री. (तत्.) सुरा गाय।

चामीकर पुं. (तत्.) 1. सोना 2. धतूरा, वि. सुनहला।